Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

हरियाणा के विद्यालयों में कम शिक्षण दक्षता वाले अध्यापको का तुलनात्मक अध्ययन

Vinita Kumari[1]* Dr. Ramesh Kumar[2]

[1] Research Scholar, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan

[2] Director, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan

सार – ***अध्यापक समाज का अभिन्न अंग है तथा समाज की संरचना एवं सामाजिक परिवर्तन में अध्यापक-अध्यापिकाओं की अहम भूमिका होती है। प्राचीनकाल मे शिक्षक को समाज में सर्वोत्तकृष्ट स्थान प्राप्त था। सामाजिक क्षेत्र में शिक्षक निर्देशन का अत्यधिक महत्व रखता था। वर्तमान परिस्थितियाँ परिवर्तित हो चुकी है। यह निःसंदेह सत्य है कि प्राचीनकाल में शिक्षकों की ज्ञान पिपासा एवं धार्मिक स्तर उच्च था। यह स्तर वर्तमान मे गिर रहा हैं। शिक्षकों के आत्म सम्मान की भावना में कमी आ रही है। यही कारण है कि अधिकांश व्यक्ति शिक्षक विवशता में बनते हैं। वर्तमान में शिक्षण व्यवसाय बन गया हैं। शिक्षक मात्रकर्मचारी है। अतः शिक्षक अपने महान उद्देश्यों को भूलकर मात्र उच्चाधिकारियों के आदेशों का पालनकर्ता बन गया हैं।***

----------X----------

परिचय

ईश्वर रचित इस वसुन्धरा के अतीत पर नजर डालते है तो इसके कई सुनहरे एवं कई विपत्ति काल नजर आते है। इस धरती पर जब से मनुष्य एवं जीव जगत का आगमन हुआ हैं, प्रत्येक प्राणी को अपनी मूल प्रवृत्ति को शान्त करने के लिये कुछ न कुछ करना आवश्यक है। इसी श्रेणी में मनुष्य अपनी भूख मिटाने के लिये कर्म करता है। उससे अपनी भूख मिटाने का प्रयास करता है। इसलिये मनुष्य अतीत काल से ही कर्मशील रहा है और आज भी है, परन्तु पूर्व काल के कर्म एवम् वर्तमान में मनुष्य के कर्म क्षेत्र में परिवर्तन आ गया है।

आधुनिक जगत में ज्ञान, तकनीकी एवं सूचना क्रान्ति के विकास के साथ-साथ सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं में भारी फेर बदल हुआ है, जिसके चलते आज मानवीय समाज अनेक पर्यावरणीय तथा मनो-सामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ है। ऐसे में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षार्थी जगत भी अछूता नहीं है। प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता व विश्व की अनेक सभ्यताएँ धार्मिक प्रवृति से सम्पृक्त थी, जिसमें धर्म को आधार मानकर शिक्षा दी जाती थी। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन सांस्कृतिक चेतना एवं धार्मिक सहिष्णुता से संचालित होता था। इसके साथ-साथ आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक प्राचीन कालीन शिक्षा में आध्यात्मिकता पर विशेष बल था। शिक्षार्थियों का सर्वांगीण विकास, सुयोग्यता, सच्चरित्र, सात्विक वृत्ति शिक्षकों के माध्यम से ही सम्भव थी। उन अध्यापकों के मूल में सांस्कृतिक आध्यात्मिक चेतना का दीपक प्रज्वलित था, फलस्वरूप समाज में अध्यापक का चयन, उसके व्यवहार की प्रभाव शीलता तथा समाज के विकास में उसके कार्यों की भूमिका विशिष्ट मिशाल के रूप में होती थी। आदिकाल से लेकर आज तक अध्यापक की भूमिका, उसके कार्य, उसकी जबावदारी एवं समाज की उसके प्रति अपेक्षा आदि तथ्यों में अधिक तेजी से परिवर्तन नहीं आया, लेकिन अब इस परिवर्तन की दिशा बदलकर भौतिकता पर केन्द्रित हो गई है।

आज भी अध्यापक को उसकी मुख्य भूमिका के रूप में जाना तो जाता है, लेकिन आज का अध्यापक प्राचीन अध्यापक की भांति गुरूत्व नहीं रखता, हाँ वह एक वेतनभोगी कर्मचारी अवश्य बन गया है। समाज के बदलते नजरिये, बदलते जीवन मूल्यों का प्रभाव शिक्षा जगत पर भी पड़ा है। आज शिक्षा जगत एक व्यावसायिक तन्त्र का रूप लेता जा रहा है, साथ ही शिक्षा के बाजारीकरण ने शिक्षक को एक व्यावसायिक तथा बिकाऊ वस्तु बना दिया है, जिसके चलते विद्यालयों की स्थापना, विश्वविद्यालयों की स्थापना, गुरू-शिष्यों के सम्बन्धों में भी अर्थ, धन ने अपनी अलख जगा दी तथा नाना प्रकार के अन्य प्रभाव यथा आधुनिकीकरण, पाश्चात्यीकरण, तकनीकीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण एवं

www.ignited.in

उदारीकरण आदि का भी शैक्षिक जगत एवं शिक्षक के स्वरूप तथा भूमिका पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस निमित्त आधुनिक अध्यापकों के व्यक्तित्व, उनके कार्य स्तरों में बदलाव तथा उनकी अध्यापन अभिवृत्ति आदि तथ्यों में भी परिवर्तन आना अपेक्षित है।

शिक्षा व शिक्षक की आवश्यकता और महत्व सर्वविदित है, क्योंकि कोई भी शिक्षा व्यवस्था और शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकती। शिक्षण यदि वृत्ति है तो उस व्यवसाय की उपयुक्त दक्षताओं एवं कौशलों को प्रशिक्षण के द्वारा ही अर्जित किया जा सकता है। इसलिए शिक्षण वृत्ति को सम-सामयिक (up-date) एवं प्रभावशाली बनाये रखने के लिए सेवा पूर्व, सेवाकालीन और एक कदम ब परिवर्तित ज्ञान की अवधारणा सम्पूर्ण विश्व में बलवती होती जा रही है। यह सर्वसिद्ध तथ्य है कि ज्ञान एक विकासात्मक अवधारणा है। सत्य व शुद्ध तथ्यों के मापदण्ड में दिन-प्रतिदिन बदलाव आ रहे हैं। इस दृष्टि से किसी भी क्षेत्र के ज्ञान में पूर्णता के सम्बन्ध में अन्तिम सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती। उसके विकास का छोर सदैव खुला रहता है। उपर्युक्त चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में आज शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षण कार्यक्रमों में भी गत्यात्मकता, अद्यतनता एवं विकासात्मकता जैसी धारणाओं का समावेश करना, बदलते वैश्वीकरण परिवेश के कारण एक आवश्यकता आधारित कार्यक्रम बन गया है। समय पर बदलती हुई परिस्थितियों के आधार पर अध्यापन वृत्ति के कार्यक्रमों में भी नई शैक्षिक मांगों का उदय हुआ है। अतः आज के अध्यापक की प्रमुख समस्या वर्तमान गतिशील समाज की आकांक्षाओं व मापदण्डों के अनुकूल स्वयं की वृत्ति को निर्धारित करना है। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में स्पष्ट रूप से सिफारिश की गई है कि "अध्यापक शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है जो सेवा से पूर्व व सेवा के उपरान्त अनवरत आवश्यक तथा प्रेरणादायी होनी चाहिए। अपने प्रथम कदम में सम्पूर्ण अध्यापक शिक्षा तन्त्र एवं शिक्षण प्रक्रिया सदैव समाज की व्यापक व नवीन आवयकताओं के अनुकूल होनी चाहिए।

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्रस्तुत अध्ययन को समग्रता प्रदान करने की दृष्टि से शोधकर्ता द्वारा शोध के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं -
2. सरकारी गैर-सरकारी अध्यापक-अध्यापिकाओं के अध्यापन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण अध्यापक-अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

शिक्षण कौशल (Teaching Skill)

शिक्षण कौशल वह विशिष्ट अनुदेशन प्रक्रिया है जिसे अध्यापक अपनी कक्षा-शिक्षण में प्रयोग करता है। यह शिक्षण क्रम की विभिन्न क्रियाओं से संबंधित होता है, जिसे शिक्षक अपनी कक्षा अन्तःक्रियाओं में लगातार प्रयोग करता है।

यदि शिक्षक आधारभूत शिक्षण कला में निपुण नही है तो वह छात्रों का उचित मार्ग-दर्शन करने और उनमें वांछित परिवर्तन लाने में सफल नहीं हो सकता है। शिक्षकों को शिक्षण कला में निपुण होने के लिये शिक्षण क्रिया के समय शिक्षक द्वारा प्रतिपादित व्यवहारों की जानकारी करके उनका अभ्यास करना नितान्त आवश्यक है। शिक्षक प्रक्रिया के समय शिक्षक द्वारा विभिन्न व्यवहारों का सम्पादन होता है। इस तरह के व्यवहारों को शिक्षण कौशल (Teaching Skill) कहते है। प्रभावशाली शिक्षण के विभिन्न शिक्षण कौशलों का ज्ञान तथा उसकी पहचान करना एक कुशल शिक्षक के लिये महत्वपूर्ण कार्य है।

शिक्षण प्रक्रिया छात्र तथा अध्यापक के मध्य होने वाली अन्तः क्रिया हैं। यह क्रिया किसी एक या अनेक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए की जाती है। शिक्षण की क्रियाओं की सफलता शिक्षण कौशलों पर निर्भर करती हैं।

शिक्षण कौशलों के माध्यम से शिक्षक शैक्षिक अद्देश्यों को प्राप्त करता हैं। ये कौशल केवल शिक्षण सामग्री के प्रयोग मात्र तकि सीमित नहीं है, अपितु शिक्षक का कार्य यह देखना भी हैं कि छात्रों का पूर्ण व्यवहार वांछित परिवत्रन के लिए प्रेरित करना हैं। अध्यापक अध्येता की रूचि, योग्यता, अभिरूचि आदि का भी ध्यान रखता है।

शिक्षण कौशल को विभिन्न विद्वानों ने अपनी-अपनी तरह से परिभाषित करनें का प्रयास किया है। ब्राउन के अनुसार शिक्षण कौशल उन व्यवहारों का समूह है जो कि छात्रों के अधिगम के उद्देश्य पूर्ति की दृष्टि से निष्पादित किये जाते हैं। बी.के.पासी के अनुसार शिक्षण कौशल अध्यापन कार्यों या व्यवहारों का वह समूह है जो कि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों के अधिगम की दृष्टि से अध्यापक द्वारा कक्षा में किये जाते है। एल.सी. सिंह के अनुसार शिक्षण कौशल को अध्यापक व्यवहारों का वह समूह बलाया गया है जो कि छात्रों में वांछित व्यवहार परिवर्तन लाने में प्रभावी होते हैं।

लारेन्स अरडंग 1975 शिक्षण कौशल से अभिप्राय है 1. योजना, विधि या उपक्रमों की श्रृंखला या वांछित लक्ष्यों की प्राप्ती के लिए या परिणामों के लिए किये जाने वाले प्रयास 2. वृहद सैनिक गतिविधी तथा कार्यवाही का नियोजन तथा निर्देशन करने की कला या विज्ञान 3. इस कला या विज्ञान का विनियोग या दृष्टांत 4. स्थितियों का कुशलता पूर्वक संचालन। डॉ. कामिल वुल्के 1974 कौशल से अभिप्राय युद्ध कला, नीति, योजना, युद्ध कौशल, चतुराई से है।

शहरी एवं ग्रामीण अध्यापक-अध्यापिकाओं की अध्यापक अभिवृत्ति, व्यक्तित्व समायोजन, संज्ञानात्मक क्षमता एवं सामाजिक पर्यावरण का स्तर क्या है? सरकारी एवं गैर-सरकारी अध्यापक-अध्यापिकाओं की अध्यापक अभिवृत्ति, व्यक्तित्व समायोजन, संज्ञानात्मक क्षमता एवं सामाजिक पर्यावरण का स्तर क्या है? शहरी एवं ग्रामीण अध्यापक-अध्यापिकाओं की अध्यापक अभिवृत्ति, व्यक्तित्व समायोजन, संज्ञानात्मक क्षमता एवं सामाजिक पर्यावरण में क्या अन्तर है? अध्यापक-अध्यापिकाओं के अध्यापन कौशल, अध्यापन अभिवृत्ति, संज्ञानात्मक क्षमता, व्यक्तित्व समायोजन एवं सामाजिक पर्यावरण में पारस्परिक क्या सहसम्बन्ध है? उक्त सभी प्रश्नों के समाधान हेतु शोधकत्र्ता ने "अध्यापक-अध्यापिकाओं के शिक्षण कौशल को प्रभावित करने वाली मनोसामाजिक दशाओं का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध करने का निर्णय लिया।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

सर्वविदित तथ्य है कि प्रत्येक मानवीय इकाई का कार्य लक्ष्य परक एवं उसके निमित महत्वपूर्ण होता है। अतः समस्याओं का उदय मानवीय आवश्यकताओं से होता है तथा उनके समाधान का सम्बन्ध आवश्यकता पूत्रि से होता है। इसीलिए कहा गया है कि आवश्यकता आविष्कार या खोज की जननी होती है। मनुष्य की चाहे जो क्रिया हो, लेकिन उस क्रिया का संचालन व सम्पादन आवश्यकता आधारित होता है। उक्त दार्शनिक सूत्र अक्षरशः इस शोध संकल्पना पर भी लागू होता है। यदि हम आज के परिवेश पर नजर डालें तो हमारी शिक्षक-शिक्षा एवं शिक्षा व्यवस्था को लेकर अनेक अपेक्षाएं है। पुराने एवं आधुनिक शिक्षकों को देखें, शिक्षकों की गिरती गरिमा को देखें, शिक्षक व्यवसाय में आये रिसावों को देखें, शैक्षिक जगत में बढ़ते भ्रष्टाचार को देखें, शिक्षक व शिक्षा के गिरते कौशलों को देखें एवं शिक्षा जगत के बदलते स्वरूप को देखें तो एक नजर में ही समझ में आ जाता है कि आज शैक्षिक जगत व शिक्षकों के व्यवहार में अनेक विसंगतियां है।

आज शैक्षिक मांगों के अनुकूल शिक्षा व्यवस्था शायद परिपूर्ण नहीं दिखाई पड़ रही हैं। इस निमित आज इस बात की तीक्ष्ण आवश्यकता महसूस की जा रही है कि वर्तमान शिक्षक समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल अपना उत्पाद अर्थात् शिक्षार्थी (Out-put) दे सके। साथ ही अपने वृत्ति की अन्तर-आत्मा के अनुकूल उनका व्यवहार तथा वचनबद्धता हो, तभी जाकर वह अपने कार्य के प्रति ईमानदार बन पाएंगे। यदि हम प्राचीन भारतीय गुरू और आज के अध्यापक को समझ के नजरिये से देखे तो यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि वत्रमान समाज में शिक्षक की वचनबद्धता को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। साथ ही शिक्षकों के गिरते स्तर व कार्य दबावों के चलते उनके उपलब्धि स्तरों के ग्राफ भी न्यून होते जा रहे है। अतः आज आवश्यकता एक ऐसे कार्यक्रम की है जो वत्रमान परिस्थितियों के अनुकूल हो, सार्थक हो तथा नवीन ज्ञान के सभी आयामों से युक्त हो।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अन्तर्गत माना है कि अध्यापकों की शिक्षा एक सतत प्रक्रिया है और इसकी सेवा पूर्व एवं सेवा कालीन अंशो को अलग नहीं किया जा सकता। अध्यापक के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है कि किसी भी समाज में अध्यापकों के दर्जे से उसकी सांस्कृतिक-सामाजिक दृष्टि का पता लगता है। कहा गया है कि कोई राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता।

कोठारी कमीशन (1964-66) के प्रतिवेदन में लिखा गया है राष्ट्र निर्माण में शिक्षक की अहम् भूमिका होती है। देश के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में होता है। निःसन्देह जेसा शिक्षक होगा, वैसे ही उसके छात्र होगें। उसी प्रकार का समाज बनेगा तथा उसके अनुरूप राष्ट्र का भविष्य बनेगा। अतः आज आवश्यकता इस बात की है, कि शिक्षक योग्य हो, उनमें व्यावसायिक योग्यता के कर्तव्य निवर्हन के प्रति।

अध्ययन का औचित्य

सर्वविदित तथ्य है कि प्रत्येक मानवीय इकाई का कार्य लक्ष्य परक एवं उसके निमित महत्वपूर्ण होता है, अतः समस्याओं का उदय मानवीय आवश्यकताओं से होता है तथा उनके समाधान का सम्बन्ध आवश्यकता पूत्रि से होता है। इसीलिए कहा गया है कि आवश्यकता आविष्कार या खोज की जननी होती है। मनुष्य की चाहे जो क्रिया हो, लेकिन उस क्रिया का संचालन व सम्पादन आवश्यकता आधारित होता है। उक्त दार्शनिक सूत्र अक्षरशः इस शोध संकल्पना पर भी लागू होता है। यदि हम आज के परिवेश पर नजर डालें तो हमारी शिक्षक-शिक्षा एवं शिक्षा व्यवस्था को लेकर अनेक अपेक्षाएं

www.ignited.in

है। सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों को देखें, शिक्षकों की गिरती गरिमा को देखें, शिक्षक व्यवसाय में आये रिसावों को देखें, शैक्षिक जगत में आ जाता है कि आज शैक्षिक जगत व शिक्षकों के व्यवहार में अनेक विसंगतियां है।

आज समाज में ज्ञान का प्रसार, आवश्यकतानुकूल संतति का विकास, विधान एवं मान्यताओं के प्रसार में शिक्षकों की केन्द्रीय भूमिका है। यदि हम उनकी आवश्यकतानुकूल कार्य क्षमताओं एवं सामाजिक दृष्टिकोण से प्रतिबिम्बित अपेक्षाओं का अध्ययन करते हैं तो वह अध्ययन स्वतः ही सार्थक है।

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति को सुसम्पन्न और समृद्ध बनाने में शिक्षक की महती भूमिका होती है। एक सच्चा शिक्षक मानवता का उद्घोषक, संस्कृति का संदेश वाहक और जागरूक व कत्र्तव्यशील नागरिक होता है। आज की बदलती हुई परिस्थितियों-परिवेश में जहाँ विश्व के सामने अनेक चुनौतियाँ मुँह उठाये खड़ी है, विश्व नफरत की आग में जल रहा है तो शिक्षक को चाहिए कि वह छात्र शक्ति को सकारात्मक और रचनात्मक दिशा प्रदान करें। साथ ही उनकी सोच और सामश्र्य को श्रेयस्कर और विश्व हितकारी कार्यों में लगाऐं। यह सब तभी हो सकता है जबकि एक अच्छा शिक्षक हो तथा इसके लिए शिक्षकों के शिक्षण कौशलों के बारे में जानने व समझने की आवश्यकता है।

साहित्य की समीक्षा

किसी भी कार्य की अच्छी सफलता के लिए शोधकत्र्ता को संबंधित साहित्य एवं सामग्री का ज्ञान होना आवश्यक है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह भौतिक विज्ञान का क्षेत्र हो अथवा सामाजिक विज्ञान का साहित्य का पुनरावलोकन अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कदम है।

कुलश्रेष्ठ एस. पी. (2018) ने "वर्तमान विद्यालयी परिदृष्य में अध्यापकों सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरण के उभरते मूल्य स्वरूपों का के अध्ययन" विषय पर पी-एच.डीस्तरीय शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि विद्यालय ग्रामीण व शहरी परिपेक्ष्य में वहां की सामुदायिकता से प्रभावित थे तथा अध्यापक के मूल्य व परम्पराएँ भी सामुदायिकता से प्रभावित पायी गई।

एन. के. चौधरी (2014) ने पंजाब विश्वविद्यालय के तत्वाधान में "निष्पत्ति अभिप्रेरणा का दुश्चिन्ता, बुद्धि, लिंग सामाजिक वर्ग और व्यावसायिकता के संबंधों का अध्ययन" करते हुये पाया कि दुश्चिन्ता और निष्पत्ति अभिप्रेरणा के बीच नकारात्मक सह-संबंध है। छात्र-छात्राओं के उच्च निष्पत्ति तथा दुश्चिन्ता और व्यावसायिक आकांक्षा एक समान है। उक्त अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने 'सारसन का सामान्य चिन्ता परीक्षण' उपकरण के रूप में प्रयोग 'सर्वेक्षण विधि' का प्रयोग कर दत्त संकलन कर, मध्यमान प्रमाप विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं सह-सम्बन्ध के माध्यम से विश्लेषण कर शोध कार्य को सार्थक स्वरूप दिया।

प्रहलाद, एन. एन. (2017) ने "जूनियर कॉलेज के विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर, मानसिक योग्यता एवं व्यक्तित्व समायोजन का उनके नैतिक निर्णय के साथ सम्बन्ध" विषय पर अध्ययन किया। इन्होंने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि भारत वर्ष के कनिष्ठ महाविद्यालयी छात्रों और संयुक्त राष्ट्र संघ के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के नेतिक निर्णय में सार्थक अन्तर है। पारिभाषिक परीक्षणों तथा व्यक्तित्व परिक्षणों के मध्य सकारात्मक सार्थक सह-सम्बन्ध पाया गया। उसी तरह विज्ञान एवं कला वर्ग विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के छात्रों में सार्थक अन्तर पाया गया। छात्र एवं छात्राओं में भी यह सार्थक अन्तर विद्यमान था किन्त आयु की विविधता के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं ज्ञात किया जा सका और न ही कनिष्ठ महाविद्यालय वर्ग के अध्ययनरत छात्रों के नेतिक निर्णय की जानकारी प्राप्त हो सकी।

सोम, पी. (2018) ने "अध्यापकों के व्यक्तित्व तरीकों, उनकी शिक्षण व्यवसाय तथा उससे सम्बन्धित क्षेत्रों की तरफ अभिवृति का अध्ययन" विषय पर पी-एच. डी. स्तर पर अध्ययन किया और अपने अध्ययन में भोपाल शहर के 1040 महिला एवं पुरूष शिक्षकों को शामिल किया। इन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि - माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक न तो बहिमुरखी थे, और न ही अन्तर्मुखी। पुरूष शिक्षक महिला शिक्षकों की तुलना मे अधिक चिन्तनशील, सावधान, मानसिक रूप से स्वस्थ पाए गए। शिष्यों की तरफ अध्यापकों का नरम रूख पाया। अध्यापन अभिवृत्ति तथा अध्यापन व्यवसाय के साथ धैर्य, सावधानी, विराग जिम्मेदारी जैसे तत्वों का महत्वपूर्ण सहसम्बन्ध पाया गया।

मितल, डॉ. अन्नपूर्णा (2014) ने 'शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार तथा उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं का अध्ययन' विषय पर अपना शोधकार्य किया जिसमें पाया गया कि कक्षा शिक्षण सम्बन्धी कुछ प्रचलित भ्रान्तियों का भी निवारण हो जाता है। अंग्रेजी माध्यम की कक्षाओं में शिक्षा व्यवहार वस्तुतः शिक्षणीय प्रभाव की कसौटी में खरा नहीं

उतरता। विज्ञान का शिक्षण भी अन्य विषयों की अपेक्षाकृत कम प्रभावी हो रहा है। महिला शिक्षक पुरूषों की अपेक्षा कम प्रभावी ढ़ंग अपनाती प्रतीत हो रही हैं।

मोरे, आरती (2016) ने 'माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के व्यक्तित्व तथा अभिवृत्तियों का उनके शिक्षण तथा उसकी प्रभावशीलता के सम्बन्ध में अध्ययन'' किया। इन्होंने अपने अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किया- 16 व्यक्तित्व कारकों में से केवल 6 कारक ऐसे पाए गए जो उन अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता से सकारात्मक सह-सम्बन्धित थे। इनमें से बुद्धिमता, व्यक्तित्व गुण सबसे महत्वपूर्ण पाए गए।

स्वामी, प्रियाकान्ता एम. (2017) ने ''अनाथ विद्यार्थियों के समायोजन, दुश्चिन्ता, आत्म-सम्प्रत्यय एवं मानसिक योग्यता का सामान्य छात्रों से तुलनात्मक अध्ययन'' विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध किया और निष्कर्ष में पाया कि-सामान्य छात्र अनाथ छात्रों की तुलना में अधिक समायोजित थे। अनाथ एवं सामान्य छात्रों के समायोजन में अन्तर नहीं पाया गया। अनाथ वर्ग के छात्र सामान्य छात्रों की अपेक्षा अधिक चिन्तित थे। सामान्य छात्रों का आत्म-सम्प्रत्यय अनाथ छात्रों की अपेक्षा अधिक ऊँचा था। आत्म-सम्प्रत्यय की दृष्टि से दोनो वर्ग के छात्रों में लिंग भेद का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।''

सेनगुप्ता, परिजात (2016) ने ''कलकता विश्व विद्यालय की महिला व पुरूष अध्यापकों के वृत्तिकरण के सम्बन्ध में केस स्टडी करते हुए अध्ययन'' इन्होंने अपने अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किया- कि बहुतायत महिला अध्यापक अपने व्यवसाय की वचनबद्धता के प्रति पुरूष अध्यापकों की तुलना में कम सजग व सफल पाई गई। क्योंकि वे उच्च सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि की थी। इसलिए उन्होंने इस वृत्ति को अर्थोपाज्रन के भाव से नहीं चुना था।

अन्वेशिका (2015) ने माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों का कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन और कम्प्यूटर शिक्षा व कम्प्यूटर शिक्षा का स्तर पर अभिवृत्ति का अध्ययन में पाया कि महिला व पुरूश शिक्षकों के कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया जबकि दोनों समूह के शिक्षकों के कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। महिला शिक्षिकाओं में कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति ज्यादा धनात्मक लगाव पाया गया। विज्ञान व कला वर्ग के शिक्षकों में कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन और कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति समान अभिवृत्ति पाई गई। केन्द्रीय व पब्लिक स्कूल के महिला शिक्षिकाओं का कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन, कम्प्यूटर शिक्षा व संयुक्त स्कोर एक समान पाया गया। कम अनुभवी व अधिक अनुभवी शिक्षकों का कम्प्यूटर सहायक अनुदेशन के प्रति अभिवृत्ति में महत्वपूर्ण अन्तर पाया गया।

सिंह, अरूण कुमार (2012) ने ''विभिन्न प्रतियोगिताओं में बॉक्सर खिलाड़ियों की शारीरिक स्वस्थता एवं व्यक्तित्व का अध्ययन'' विषय पर स्वतंत्र शोध कार्य किया और पाया कि सभी खिलाड़ियों का व्यक्तित्व विभिन्न प्रतियोगिताओं में अलग रहता है लेकिन शारीरिक स्वस्थता में समानता पायी गई।

अनुसंधान क्रियाविधि

शोधकार्य एक ऐसा व्यवस्थित तथा नियंत्रित अध्ययन है, जिसके अन्तर्गत संबंधित चरों व घटनाओं के पारस्परिक संबंधों का अन्वेषण तथा विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकी एवं वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता है तथा प्राप्त परिणामों से वैज्ञानिक निष्कर्षों, नियमों तथा सिद्धान्तों की रचना, खोज व पुष्टि की जाती है।

अनुसंधान की श्रेष्ठता विधि पर निर्भर करती है। विधि अनुसंधान प्रक्रिया को परिचालित करने का एक तरीका है जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित है। शोधकार्य एक विशेष महत्व का उत्तरदायित्वपूर्ण सत्य कार्य है और अगर इस उत्तरदायित्व को पूर्ण करने में वैज्ञानिक व उपयुक्त विधि का प्रयोग नहीं किया जाये तो यह कार्य कभी पूर्ण नहीं हो सकता है।

प्रस्तुत शोध में विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात् यह निष्कर्ष निकाला गया कि शोध समस्या के मुख्य उद्देश्य अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि से अधिक सम्बन्धित हैं। अतः शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधकत्र्ता द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

पार्टन के शब्दों में:- ''किसी सर्वेक्षण की योजना, संगठन तथा संचालन किसी व्यापार को चलाने के समान है।'' दोनों के लिए विशेष लगन, चतुराई, प्रबन्ध की योजना, विशेष अनुभव तथा इसी प्रकार के काम का प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रारम्भ से अन्त तक सावधानी के साथ योजना बनाने पर ही उससे प्राप्त निष्कर्षों पर विश्वास किया जा सकता है और ऐसी दशा में ही निष्कर्ष प्रकाशन के योग्य स्थिति तक पहुँच सकते हैं।''

www.ignited.in

सर्वेक्षण विधि का अर्थ

सर्वेक्षण विधि वह प्रणाली है जिसमें अनुसंधानकत्र्ता नियंत्रित नहीं होता है। वरन् वह स्वतंत्र रूप से विचरण करता है। इसके माध्यम से शोधकत्र्ता लोगों के जीवन क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं का स्वच्छन्द मन से अध्ययन करता है। वस्तुतः सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किसी क्षेत्र के बारे में निश्चित जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है। सर्वेक्षण उपागम उन समकों को एकत्रित करने व विश्लेषण करने की विधि है जो बहुत से ऐसे उत्तर देने वालों के द्वारा संकलित किया जाता है जो एक सुनिश्चित जनसंख्या के प्रतिनिधि है।

डेटा विश्लेषण

आंकड़ों का संकलन कर लेने के पश्चात् उनके विश्लेषण का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। किसी भी अनुसंधान की सफलता केवल इस बात पर निर्भर नहीं करती है कि वह कितनी उपयुक्त एवं विश्वसनीय प्रविधियों के द्वारा आंकड़ों को संकलित किया गया है, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि संकलित किये गये आंकड़ों को किस तरह विश्लेषित किया जाये। प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य है दत्तों को विश्लेषण करना एवं परिणामों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत करना तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष ज्ञात करना।

तालिका संख्या – 1

शहरी अध्यापक के अध्यापन कौशल मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
83	17	0	81.12 से 84.21 तक	15.78 से 18.87 तक	0 से 0 तक

उक्त सारणी में शहरी अध्यापक के अध्यापन कौशल मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार सबसे अधिक अध्यापन कौशल उच्च स्तर पर 83 प्रतिशत तथा 81.12 से 84.21 के बीच पाया गया। नीचे शहरी अध्यापक के अध्यापन कौशल मापनी के प्राप्तांकों के प्रतिशत का आरेख दिया गया है:-

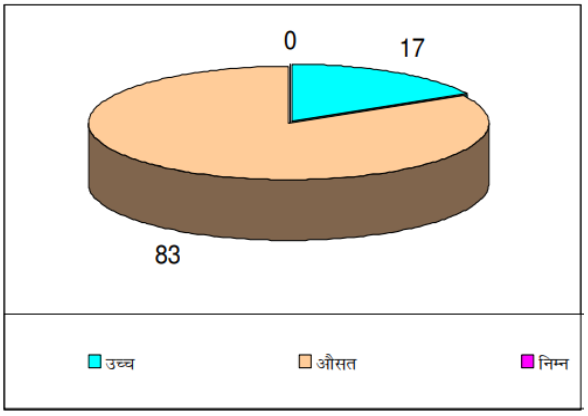

आरेख संख्या - 1

तालिका संख्या – 2

ग्रामीण अध्यापक के अध्यापन कौशल मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना

प्राप्तांक प्रतिशत			प्रतिशत की सार्थकता		
उच्च	औसत	निम्न	उच्च	औसत	निम्न
19	81	0	15.48 से 21.84 तक	78.15 से 84.51 तक	0 से 0 तक

उक्त सारणी में ग्रामीण अध्यापक के अध्यापन कौशल मापनी के प्राप्तांकों का प्रतिशत एवं प्रतिशत की सार्थकता की गणना की है जिसके अनुसार सबसे अधिक अध्यापन कौशल औसत स्तर पर 81 प्रतिशत तथा 78.15 से 84.51 के बीच पाया गया। नीचे ग्रामीण अध्यापक के अध्यापन कौशल मापनी के प्राप्तांकों के प्रतिशत का आरेख दिया गया है:-

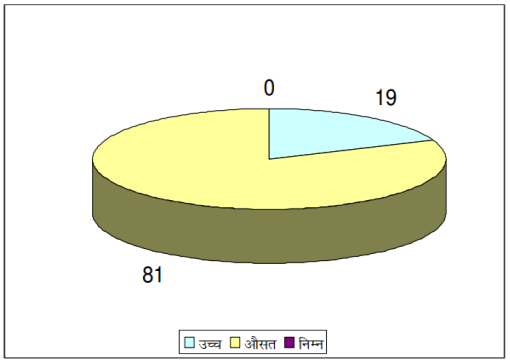

आरेख संख्या - 2

निष्कर्ष

एक उत्तम शोधकार्य की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष शोध विधियों के सम्यक् प्रयोग एवं तर्क संगत व्याख्याओं पर आधारित होते हैं। उनमें वस्तुनिष्ठता

www.ignited.in

होती है। वह अपने निष्कर्ष के द्वारा ही अपने शोधकार्य को अंतिम रूप प्रदान कर सकता है, या यों कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि बिना निष्कर्ष के निकले उसके शोधकार्य को अपूर्ण माना जाता है। जिस प्रकार किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व उद्देश्यों की आवश्यकता होती है। बिना उद्देश्यों के कोई भी कार्य सफल नहीं माना जा सकता, ठीक उसी प्रकार शोधकार्य के पूर्ण हो जाने पर निष्कर्ष आवश्यक होते हैं और उन्हीं प्राप्त निष्कर्षों के माध्यम से ही शोधकार्य की शैक्षिक उपयोगिता के सम्बन्ध में आवश्यक सुझाव दिये जा सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. भाग्रव, महेश: आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण$मापन' (2017) एच. पीभाग्रव बुक हाउस आगरा पेज- 463-64,526
2. कुलश्रेष्ठ एस. पी.: "शिक्षा मनोविज्ञान" (2018) अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ संख्या-55,76,421.425
3. प्रहलाद, एन. एन.: शिक्षा अनुसंधान, (2013)आर.लाल बुक डिपो मेरठ पे. 125
4. मितल, डा. अन्नपूर्णा (2016): "ऑक्सफोर्ड एडवांस लर्नर डिक्सनरी" ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस नई दिल्ली
5. मोरे, आरती (2018): "वृहद हिन्दी शब्द कोश" ज्ञान मण्डल लि. बनारस
6. स्वामी, प्रियाकान्ता एम. "राष्ट्रीय चेतना के संदेश वाहक: शिक्षक, शिविरा पत्रिका, 2017, पृ.सं. 12
7. सेनगुप्ता, परिजात, "क्या नौकरी से आप उभ चुके हैं?" सर्वोतम फरवरी 2016, पृ. सं. 51
8. सिंह, अरूण कुमार: "उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान" (2012) मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या-55,126
9. अग्रवाल जे.सी.: "स्वतन्त्र भारत में शिक्षा का विकास' (2018) आर्य बुक डिपो, 30, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली, पृ.सं. 252
10. अरोड़ा, श्रीमती रीता: "शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार" (2015) शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326-327
11. अलतेकर अनन्त सदाशिव: "प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति', (2017) नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी,, पृ.-155
12. आर.एन.केवट: "राष्ट्रीय चेतना के संदेश वाहक: शिक्षक, शिविरा पत्रिका, 2017, पृ.सं. 12
13. आर्य हरफूल: "रिसर्च पब्लिकेशन्स" (2015) नई दिल्ली,2000 पृ. 96
14. कपिल, एच के.: अनुसंधान विधियाँ" (2012) द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भाग्रव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या-23
15. कोठारी, सी.आर. (2008) "अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी" न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या-2

Corresponding Author

Vinita Kumari*

Research Scholar, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan